उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. लालधारी यादव

प्रवक्ता (शिक्षा शास्त्र), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सारनाथ वाराणसी, उ. प्र

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। वाराणसी जनपद के परिषदीय विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 तक अध्ययरत् समस्त विद्यार्थियों को समग्र के रूप में लिया गया है। समग्र से याच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा कुल 220 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। शोध अध्ययन हेतु निर्मित विभिन्न परिकल्पनाओं के परीक्षण के पश्चात् ज्ञात हुआ कि माता–पिता की शैक्षिक योग्यताए आवासीय परिक्षेत्र व परिवार का स्वरूप बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित कर रहा है। प्राप्तांको के मध्यमान से स्पष्ट है कि साक्षर, शहरी परिक्षेत्र, संयुक्त परिवार के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अपने समूह में सबसे ज्यादा हैए अर्थात् इन बच्चों पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का सबसे ज्यादा सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस संदर्भ में शिक्षाशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों, शैक्षिक प्रशासक, शिक्षक, अभिभावक व अन्य हितधारकों द्वारा पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंधित विभिन्न चरों के मध्य शैक्षिक उपलब्धि में पाये जाने वाले अंतर को कम करने की दिशा में कार्य करने की जरूरत है, जिससे परिषदीय विद्यालयों में सभी बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में समानता लायी जा सके।

संकेत शब्द *– उच्च प्राथमिक विद्यालय, शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक पृष्ठभूमि।*

प्रस्तावना :–

शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य बालक के जन्म से ही उसके परिवार द्वारा अनौपचारिक रूप से तत्पश्चात् विद्यालय भेजकर औपचारिक रूप से प्रारंभ कर दिया जाता है। शिक्षा समाज के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति का साधन होती है। जैसा समाज होता है और जैसी उसकी जरूरतें होती हैं वैसी ही उसकी शिक्षा होती है। शिक्षा समाज के भूत, वर्तमान और भविष्य, तीनों से संबंधित होती है; इसके द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति और भविष्य का निर्माण किया जाता है। इस दृष्टि से शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया है। मनुष्य शिक्षा के द्वारा अपने समाज में अनुकूलन करता है।

टी. रेमन्ट (T. Raymont) के शब्दों में – ''शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य शैशवकाल से प्रौढ़काल तक विकास करता है और जिसके द्वारा वह धीरे–धीरे अपने को अनेक प्रकार से अपने प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पर्यावरण के अनुकूल बनाता है।''

शिक्षा की भूमिका के संदर्भ में शिक्षा शास्त्रियों के मत अलग–अलग हैं। सभी ने बालक के विकास में शिक्षा के योगदान को सर्वोपरि माना है। महात्मा गांधी के अनुसार – ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''

प्रयोजनवादी दार्शनिक जॉन डीवी के शब्दों में – ''शिक्षा व्यक्ति की उन सब योग्यताओं का विकास है जो उसमें अपने पर्यावरण पर नियंत्रण रखने तथा अपनी संभावनाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करे।'' जर्मन शिक्षा शास्त्री पैस्टालॉजी का मत है कि – ''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।''

भारतीय मनीषी स्वामी विवेकानंद मनुष्य को जन्म से पूर्ण मानते थे और शिक्षा के द्वारा उसे अपनी इस पूर्णता की अनुभूति करने योग्य बनाने पर बल देते थे। उनके शब्दों में–''मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

बालक अपने प्रारंभिक वर्षों में घर व पास–पड़ोस से हंसना, बोलना, चलना, खेलना इत्यादि क्रियायें सीखता है। वह विभिन्न खेलों व क्रियाकलापों द्वारा वस्तुओं, आकृतियों एवं घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। जब बालक एक निश्चित आयु के पश्चात् विद्यालय में प्रवेश करता है तो उसे एक नए वातावरण का सामना करना पड़ता है। इस वातावरण से समायोजन स्थापित करने हेतु वह ज्ञानेंद्रियों का सहारा लेता है। बालक विद्यालय में निरंतर पढ़ना–लिखना, खेलना–कूदना आदि क्रियायें सीखता है जिससे उसके व्यवहार में निरंतर परिवर्तन परिलक्षित होता है।

परिषदीय विद्यालयों में दक्षता आधारित अधिगम प्राप्ति के लिए शासन स्तर से समय–समय पर शिक्षकों के क्षमता संवर्धन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। शिक्षकों के लिए शिक्षण संदर्शिकायें तैयार की जा रही हैं, जिसके सहयोग से शिक्षक अपने शिक्षण कौशल में दिन–प्रतिदिन निखार ला रहे हैं। शिक्षण योजनाओं की सहायता से विभिन्न गतिविधियों व शिक्षण–अधिगम सामग्री का प्रयोग करते हुए शिक्षण कार्य को छात्र–केंद्रित बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके बावजूद शिक्षण–अधिगम में अपेक्षित सुधार नहीं हो रहा है। आज हमारा देश काफी उन्नत कर चुका है, परंतु आज भी हमारे समाज में बच्चों को सामाजिक–आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बच्चे का पारिवारिक पृष्ठभूमि उसके शैक्षिक विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अगर बच्चों के पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंधित सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जाए तो उनके विकास को सही दिशा मिलेगी। अकेडमिक स्तर पर सतत् प्रयास के बावजूद परिषदीय विद्यालयों में कक्षा–8 तक के बच्चों में शैक्षणिक उपलब्धि में संतोषजनक सुधार नहीं होता दिख रहा है।

वर्तमान समय में यदि कक्षा की उपलब्धि पर ध्यान दिया जाए तो पता चलता है कि बच्चों की उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर है। यद्यपि उनको एक साथ एक जैसा शिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसका क्या कारण हो सकता है? इसके लिए विभिन्न दृष्टिकोणों से भिन्न–भिन्न उत्तर दिए जाते हैं। समय–समय पर शिक्षाविदों के द्वारा उपलब्धि में अंतर होने के कारणों का पता लगाने का प्रयास किया गया और पाया गया कि केवल शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया ही नहीं वरन् बालक का पारिवारिक पृष्ठभूमि भी छात्रों की उपलब्धि को प्रभावित करता है क्योंकि बालक सबसे अधिक समय अपने परिवार व मित्र समूह के साथ व्यतीत करता है। परिवार से जुड़े अनेक कारक जैसे – माता–पिता की शैक्षिक योग्यता, परिवार का स्वरुप, आवासीय परिक्षेत्र, पड़ोसियों का व्यवहार, मित्र–समूह, गांव की भौगोलिक स्थिति आदि बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। अतः बालक के पारिवारिक पृष्ठभूमि का उसके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना आवश्यक प्रतीत होता है।

समस्या कथन :–

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्याः–

- **उच्च प्राथमिक विद्यालय** – उच्च प्राथमिक विद्यालय से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जिनकी मान्यता बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रदान की जाती है तथा उनका संपूर्ण वित्तीय वहन सरकार द्वारा किया जाता है। साथ ही साथ इनका व्यवस्थापन, प्रबंधन, संचालन तथा पर्यवेक्षण भी सरकार द्वारा किया जाता है।
- **विद्यार्थी** – विद्यार्थी शब्द से तात्पर्य बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 तक अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं से है, जिनकी आयु लगभग 10 से 14 वर्ष तक होती है।

- **शैक्षिक उपलब्धि** – प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रयुक्त उपलब्धि परीक्षण पर विद्यार्थियों द्वारा अर्जित प्राप्तांकों से है।
- **पारिवारिक पृष्ठभूमि** – प्रस्तुत शोध में पारिवारिक पृष्ठभूमि से तात्पर्य विद्यार्थी से संबंधित परिवार की शैक्षिक योग्यता, आवासीय परिक्षेत्र (शहरी/ग्रामीण), परिवार का स्वरुप (संयुक्त/एकाकी) आदि से है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में माता–पिता के शैक्षिक योग्यता के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में शहरी व ग्रामीण परिक्षेत्र के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में संयुक्त व एकाकी परिवार के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :–

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के शैक्षिक योग्यता का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है
3. संयुक्त एवं एकाकी परिवार से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएँ :–

1. प्रस्तुत अध्ययन में वाराणसी जिले के चिरईगांव व नगर विकास खंड में स्थित उच्च प्राथमिक/कम्पोजिट विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को लिया गया है।
2. अध्ययन में 220 विद्यार्थियों में क्रमशः 110 विद्यार्थी शहरी व 110 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से लिए गए हैं।
3. अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु कक्षा–6 वीं के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
4. अध्ययन में केवल उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित विद्यालयों को ही लिया गया है।

अध्ययन विधि :–

वर्तमान शोध कार्य में वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के एकत्रीकरण एवं विश्लेषण हेतु मात्रात्मक शोध उपागम का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या (समग्र) :–

प्रस्तुत अध्ययन में समग्र वाराणसी जनपद के उच्च प्राथमिक विद्यालय के रूप में कक्षा 6 से 8 तक के परिषदीय विद्यालयों अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन में संभाविता आधारित प्रतिदर्शन विधि तथा प्रविधि के आधार पर समग्र से संबंधित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के 16 उच्च प्राथमिक/कम्पोजिट विद्यालयों से यादृच्छिक (Random) प्रतिदर्शन विधि द्वारा कुल 220 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

आंकड़ों के संग्रहण हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति तथा परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु आंकड़ों का संग्रहण करने के लिए शोधकर्ता ने डॉ. सुरेन्द्र राम (आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी) व श्री विजय कुमार वर्मा (शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी) द्वारा निर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (2022) का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियां :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा संकलित आंकड़ों का विश्लेषण विषय विशेषज्ञ की सहायता से एस. पी. एस. एस. (SPSS) सॉफ्टवेयर का उपयोग करके किया गया व अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप निर्मित शून्य परिकल्पनाओं के निराकरण हेतु उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधियों के माध्यम से मध्यमान, मानक विचलन, टी. , एफ. तथा पी.–मूल्य आदि की गणना की गयी है।

आंकड़ों का विश्लेषण व विवेचन :–

विभिन्न स्वतंत्र चरों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन के लिए टी.–परीक्षण (दो समूह के मध्य) व एफ.–परीक्षण (दो से अधिक समूहों के मध्य) का प्रयोग किया गया। एफ.–मूल्य सार्थक आने पर दो समूहों के बीच तुलना के लिए पोस्ट हॉक परीक्षण का उपयोग किया गया। शोधकर्ता द्वारा निर्मित विभिन्न अध्ययन उद्देश्यों से संबंधित परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के पश्चात् प्राप्त परिणामों की व्याख्या की गयी, जिसका विवरण निम्नवत् है–

प्रथम शून्य परिकल्पना – विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के शैक्षिक योग्यता का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त शून्य परिकल्पना के निराकरण हेतु संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम तालिका संख्या–1 में प्रदर्शित है –

तालिका संख्या–1

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के शैक्षिक योग्यता के प्रभाव की सार्थकता

क्र. स.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	एफ.–मूल्य	पी.–मूल्य	सार्थकता का स्तर
1.	निरक्षर	37	19.97	7.769	4.725	0.003	0.05
2.	साक्षर	99	25.87	7.982			
3.	हाई स्कूल	45	23.38	9.796			
4.	इंटरमीडिएट	39	25.31	8.603			

(* 0.003 < 0.05, सार्थक अंतर है)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त पी.–मूल्य सार्थकता के स्तर से कम है, अतः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांक पर माता–पिता के शैक्षिक योग्यता का सार्थक प्रभाव पड़ता है। पुनः अलग–अलग शैक्षिक योग्यता समूह के अनुसार प्राप्त पी.–मान का प्रस्तुतीकरण निम्न तालिका द्वारा किया गया है –

तालिका संख्या–2

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के शैक्षिक योग्यता के प्रभाव की सार्थकता

क्र. स.	समूह	पी.–मूल्य	सार्थकता का स्तर
1.	निरक्षर / साक्षर	0.000	0.05 (0.000<0.05)
2.	निरक्षर / हाई स्कूल	0.071	0.05 (0.071>0.05)
3.	निरक्षर / इंटर मीडिएट	0.006	0.05 (0.006<0.05)
4.	साक्षर / हाई स्कूल	0.103	0.05 (0.103>0.05)
5.	साक्षर / इंटर मीडिएट	0.726	0.05 (0.726>0.05)
6.	हाई स्कूल / इंटर मीडिएट	0.298	0.05 (0.298>0.05)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि निरक्षर व साक्षर तथा निरक्षर व इंटरमीडिएट अभिभावक समूह से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांक में सार्थक अंतर है, जबकि निरक्षर व हाई स्कूल, साक्षर व हाई स्कूल, साक्षर व इंटरमीडिएट तथा हाई स्कूल व इंटर मीडिएट अभिभावक समूह से सम्बन्धित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अलग–अलग समूहों के औसत प्राप्तांको के बीच जो भी अंतर देखा जा रहा है, वह न्यादर्शन में अस्थिरता के कारण हो सकता है अर्थात् यह अंतर वास्तविक न होकर संयोगवश है।

द्वितीय शून्य परिकल्पना – ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त शून्य परिकल्पना के निराकरण हेतु संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम तालिका संख्या–3 में प्रदर्शित है –

तालिका संख्या–3

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में शहरी एवं ग्रामीण परिक्षेत्र के प्रभाव की सार्थकता

क्र. स.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी.–मूल्य	पी.–मूल्य	सार्थकता का स्तर
1.	शहरी	110	25.95	9.069	2.975	0.003	0.05
2.	ग्रामीण	110	22.53	7.909			

(* 0.003 <0.05, सार्थक अंतर है)

उपरोक्त तालिका मान से स्पष्ट है कि ग्रामीण व शहरी परिक्षेत्र में निवास करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांक में सार्थक अंतर है अर्थात् मध्यमानों के मध्य अंतर संयोगवश न होकर वास्तविक है। इसके आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

तृतीय शून्य परिकल्पना – संयुक्त एवं एकाकी परिवार से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त शून्य परिकल्पना के निराकरण हेतु संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम तालिका संख्या–4 में प्रदर्शित है –

तालिका संख्या – 4

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में संयुक्त एवं एकाकी परिवार के प्रभाव की सार्थकता

क्र. स.	**समूह**	**संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी.–मूल्य**	**पी.–मूल्य**	**सार्थकता का स्तर**
1.	**एकाकी परिवार**	115	22.09	8.750	4.039	0.000	0.05
2.	**संयुक्त परिवार**	105	26.66	7.961			

(*0.000 <0.05, सार्थक अंतर है)

उपरोक्त तालिका मान से स्पष्ट है कि संयुक्त एवं एकाकी परिवार से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांक में सार्थक अंतर है, अर्थात् मध्यमानों के मध्य अंतर संयोगवश न होकर वास्तविक है। इसके आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

शोध निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव के अध्ययन हेतु पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंधित अलग–अलग चरों पर आधारित शोध उद्देश्यों का निर्माण किया गया। शोध उद्देश्यों पर आधारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण के पश्चात् प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् हैं–

- विद्यार्थिओं की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के शैक्षिक योग्यता का सार्थक प्रभाव पाया गया। निरक्षर व साक्षर तथा निरक्षर व इंटरमीडिएट अभिभावक समूह से सम्बन्धित विद्यार्थिओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। साक्षर अभिभावक समूह से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे ज्यादा व निरक्षर अभिभावक समूह से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम पायी गयी।
- ग्रामीण व शहरी परिक्षेत्र में निवास करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। शहरी परिक्षेत्र में निवास करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, ग्रामीण परिक्षेत्र में निवास करने वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी।
- एकाकी व संयुक्त परिवार से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। संयुक्त परिवार से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, एकाकी परिवार की तुलना में अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ :–

प्रस्तुत शोध के परिणामों व निष्कर्षों के आधार पर यह पाया गया कि माता–पिता/अभिभावक की शैक्षिक योग्यता, आवासीय परिक्षेत्र व परिवार का स्वरूप विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करता है। शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणामों एवं निष्कर्षों के आधार पर इसके कुछ शैक्षिक निहितार्थ निम्नवत् हैं –

- साक्षर/पढ़े–लिखे माता–पिता के पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि, निरक्षर माता–पिता के पाल्यों की तुलना में अधिक है। माता–पिता/अभिभावक की शैक्षिक योग्यता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में समानता लाने के लिए शैक्षिक प्रशासक, शिक्षा शास्त्री व शिक्षकों द्वारा निरक्षर या कम पढ़े–लिखे माता–पिता व उनके पाल्यों को शिक्षा के महत्व/उपयोगिता के बारे में बताया जाए व घर पर बच्चों को पढ़ने के लिए बेहतर परिवेश प्रदान करने हेतु प्रेरित किया जाए। इस कार्य के लिए विद्यालय स्तर पर शिक्षकों द्वारा टोली, स्वयं सहायता समूह अथवा अन्य हितधारकों का सहयोग लिया जा सकता है। विद्यालय व समाज के जागरूक सदस्यों का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह ऐसे माता–पिता/अभिभावकों को प्रेरित करें जो बच्चों की शिक्षा के प्रति उदासीन रहते हैं, जिससे उक्त असमानता को दूर किया जा सके।
- अलग–अलग आवासीय परिक्षेत्र से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया। शहरी परिक्षेत्र के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि, ग्रामीण परिक्षेत्र के बच्चों से अधिक है। इस अंतर को कम करने अथवा मिटाने हेतु, हमें ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की शिक्षा पर विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत है तथा शिक्षा जगत से जुड़े अन्य लोगों को धरातल पर उतरकर कार्य करनें की आवश्यकता है। ग्रामीण परिक्षेत्र के विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता, विद्यालय तक बच्चों की पहुंच, माता–पिता/अभिभावक को शिक्षा के फायदों के बारे में बताना, परिवार में शैक्षिक वातावरण का निर्माण, विद्यालय में बच्चों की सतत् उपस्थिति, शिक्षक–अभिभावक के मध्य संवाद स्थापित करना, किताबों व अन्य शैक्षणिक सामग्री की सहज उपलब्धता, विद्यालय में पठन–पाठन हेतु रुचिकर वातावरण तैयार करना, समय–समय पर शिक्षा के महत्व को लेकर जन–जागरूकता से सम्बंधित

कार्यक्रमों को आयोजित करना जैसे प्रयासों के द्वारा शैक्षिक उपलब्धि में अंतर को समाप्त किया जा सकता है।

- संयुक्त परिवार से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, एकाकी परिवार के विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की संकल्पना बहुत ही प्राचीन है। आधुनिकीकरण व आर्थिक कारणों से संयुक्त परिवार की संरचना में विखराव आ रहा है। निम्न व मध्यम आय वाले एकाकी परिवार में अभिभावक बच्चों की शिक्षा पर बराबर ध्यान नहीं दे पाते हैं, वे सदैव अपनी आजीविका को लेकर परेशान रहते हैं। रोजगार के लिए अक्सर माता, पिता अथवा दोनों घर के बाहर कार्य करने के लिए विवश रहते हैं जिसके कारण घर पर उनके बच्चों की सही देखभाल नहीं हो पाती है व बच्चों की विद्यालयी प्रगति से अनभिज्ञ रहते हैं। वे अपने बच्चों को पढ़ाने व गृह कार्य को पूरा करने में सहयोग नहीं दे पाते हैं, जिससे उनके बच्चे शैक्षिक उपलब्धि में पिछड़ जाते हैं। जबकि संयुक्त परिवार में माता–पिता के साथ–साथ अन्य सदस्यों द्वारा उपरोक्त समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। वास्तव में यह शोध परिणाम हमारे समाज में एकाकी परिवार के बढ़ते प्रचलन के नकारात्मक प्रभाव को भी दर्शाता है। अतः आज भी संयुक्त परिवार की अवधारणा को मजबूत करने की जरूरत है, जिससे एकाकी परिवार में शिक्षा से संबंधित उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को दूर करते हुए विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर समाप्त किया जा सके।

उपरोक्त के संदर्भ में शिक्षाशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों, शैक्षिक प्रशासक, शिक्षक, अभिभावक व अन्य हितधारकों द्वारा पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंधित विभिन्न चरों के मध्य शैक्षिक उपलब्धि में पाये जाने वाले अंतर को समाप्त करने की दिशा में कार्य करने की जरूरत है, जिससे परिषदीय विद्यालयों में सभी बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में समानता लायी जा सके।

संदर्भ सूची :–

लाल, आर. बी. (2010). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत.* रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ.

सक्सेना, एस. (2008). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार.* साहित्य प्रकाशन, आगरा.

रुहेला, एस. (2014). *शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार.* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा.

सिंह, आर. के. (2006). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ. मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली.

वशिष्ठ, के. सी. (2018). *वर्तमान भारतीय समाज और प्रारंभिक शिक्षा.* श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

सिंह, डी. वी. पी., एवं शर्मा, पी. के. (2018). *वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारंभिक शिक्षा.* ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ.

राज्य शिक्षा संस्थान. (n.d.). वर्तमान भारतीय समाज और प्रारंभिक शिक्षा. राज्य शिक्षा संस्थान. उत्तर प्रदेश, प्रयागराज.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति. 2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, भारत सरकार.

How to cite reference of this paper-

यादव, एल. (2023). उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन. *Educational Metamorphosis*, *2*(2), 119-125